रिपोर्ट :

जिला अकादमिक सन्दर्भ समूह कार्यशाला (हिंदी)

"किताबें करती हैं बातें"

20-21 नवम्बर 2023

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान रुद्रप्रयाग (रतूड़ा) द्वारा संस्थान के सभागार में दिनांक 20 एवं 21 नवम्बर 2023 को दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसमें जनपद के तीनों विकासखंड से प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों के 20 शिक्षक-शिक्षिकाओं ने सक्रिय प्रतिभाग किया। जिला अकादमिक सन्दर्भ समूह (हिंदी) की यह कार्यशाला शिक्षकों में पढ़ने-लिखने की संस्कृति के विकास पर केन्द्रित रही, जिसका विषय था- *"किताबें करती हैं बातें"*। इस कार्यशाला में अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन का सहयोग रहा।

कार्यशाला का सन्दर्भ :

शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके लिए निरंतर सोच-विचार की जरुरत है। आज के तेजी से बदलते समाज में तो निरंतर सीखना लाजमी है, नहीं तो हम पिछड़ जाएँगे। शिक्षा में काम करने वाले सभी कर्मियों का सीखना कई तरीकों से संपन्न होता है। इस सोच-विचार की प्रक्रिया को गति देने के काम में पढ़ना और लिखना महत्वपूर्ण पक्ष है। बहुत से शिक्षक किताबों से पढ़कर अपने काम को क्लासरूम में जीवंत कर देते हैं। लेकिन वास्तविकता यह है कि ऐसे बहुत कम शिक्षक हैं जो यह आवश्यकता महसूस करते हैं। यह आवश्यकता महसूस करवाने वाला वातावरण भी हमारे आसपास नहीं है जिससे पढ़ने के प्रति मोह विकसित हो पाए। ऐसी सामग्री की उपलब्धता की भी एक सीमा है जो शिक्षकों को उनके निरंतर विकास के लिए चाहिए। इस परिस्थिति में शिक्षक उसी समझ से काम चलाता रहता है जो वह अपने प्रशिक्षण के समय बना पाया था। दूसरा, विद्यार्थियों में पढ़ने-लिखने सम्बन्धी आदतें विकसित करने के लिए भी एक वातावरण की आवश्यकता होती है जिसमें पढ़ने सम्बन्धी कुछ रुचिकर सामग्री हो, पढ़ने का एक स्थान हो, कुछ प्रक्रियाएँ हों जिनसे बच्चे उत्साहित और सक्रिय हो पाएं। विद्यालय में ऐसे वातावरण-निर्माण की जिम्मेदारी एक शिक्षक की ही होगी। अत: शिक्षक को खुद से यह शुरुआत करनी होगी और वह तभी अच्छे से कर पाएगा जब उसकी अपनी रूचि

एवं समझ होगी। प्रारंभिक भाषा कक्षाओं में शिक्षण का मुख्य उद्देश्य सार्थक रूप में बोलना, सुनना, पढ़ना और लिखना सीखाना होता है। लेकिन हमारे स्कूलों में हम बच्चों को सीधे पढ़ना और लिखना सिखाते हैं और इसकी प्रक्रिया बहुत ही निष्क्रिय तरीके से चलती है। जबकि बच्चे निष्क्रिय शिक्षार्थी नहीं होते हैं; बल्कि वे अपने चिंतन एवं अनुभव का उपयोग करके ज्ञान का निर्माण करते हैं। इसके लिए बच्चे विभिन्न प्रकार के अनुभवों से गुजरते हैं। लेकिन अमूमन हमारे विद्यालयों में विस्तृत अनुभव देने की बजाए वर्ण-मात्रा रटवाने और कुछ नीरस वाक्यों पर ज्यादा फोकस हो जाता है, जिनका बच्चे के संदर्भ या परिवेश से जुड़ाव नहीं होता है। जिस वजह से बच्चों में सीखने के प्रति अरुचि हो जाना स्वाभाविक है। इस अरुचि को रूचि में बदलने और बच्चों को सार्थक अनुभव देने की दिशा में प्राथमिक कक्षाओं में भाषा के विकास में बाल साहित्य बहुत महत्त्वपूर्ण हो सकता है। प्रारंभिक कक्षाओं के लिए पाठ्यपुस्तकें भी इस तरह से डिज़ाइन की जाती हैं जिसमें बच्चों को भाषा की जटिलता को समझने के मामले में कम करके आँका जाता है। पाठ्यपुस्तकों के अलावा अन्य साहित्य का भी अभाव हम अपने विद्यालयों में देख सकते हैं। यदि साहित्य उपलब्ध होता भी है तो उसके इस्तेमाल की रणनीतियाँ प्रयोग में नहीं ला पाते हैं। बहुत सारे ऐसे शोध और सिफारिशें हैं जो सुझाव देते हैं कि हमें प्रारंभिक कक्षाओं में भाषा का विकास करने के लिए साहित्य का उपयोग करना चाहिए। हमारे नीतिगत दस्तावेज़ जैसे- ***NCF-2005, RTE*** *अधिनियम-2009*, ***NEP*** *2020* और ***NFGP*** *(भाषा)*- ***NCERT*** भी विद्यालयों में अच्छे पुस्तकालयों की स्थापना तथा साहित्य के रचनात्मक उपयोग की अनुशंसा करते हैं। अभी भी परिस्थितियों वश शिक्षकों-अभिभावकों में यही धारणा है कि पाठ्य पुस्तकों के अलावा कुछ भी पढ़ना व्यर्थ है। लेकिन विभिन्न शोध एवं अभ्यास यह बताते हैं कि बच्चों को जितनी ज्यादा रोचक सामग्री पढ़ने के लिए उपलब्ध होगी और इस रुचि को विकसित करने के लिए जितने व्यवस्थित प्रयास किए जाएंगे उतने ही बच्चों के सीखने की रफ्तार बढ़ेगी।

इसी सन्दर्भ में कार्यशाला में अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन के सहयोग से DIET रुद्रप्रयाग द्वारा पढ़ने और लिखने की संस्कृति के विकास के लिए यह आयोजित हुई।

कार्यशाला के उद्देश्य :

- शिक्षकों में पढ़ने-लिखने की संस्कृति का विकास।
- शिक्षकों की बाल साहित्य को प्रयोग करने की क्षमता का विकास जिससे विद्यार्थियों की पढ़ने-लिखने और अभिव्यक्ति की क्षमता का विकास हो पाए।
- विद्यालय में रीडिंग कार्नर कैसा हो और कैसे स्थापित करें इसकी योजना बनाना।

पूर्व तैयारियाँ :

कार्यशाला के लिए पहले से ही तैयारियाँ शुरू कर दी गई थीं। शिक्षकों के लिए एक आकर्षक डायरी, स्तरानुसार कहानियों का सेट, प्रमाण पत्र, एवं अन्य आवश्यक सामग्री का प्रबंध कर लिया गया था। यह कार्यशाला पढ़ने-लिखने की संस्कृति के विकास के लिए होने जा रही थी, इसलिए पहले से ही DIET सभागार में एक सुंदर सा रीडिंग कार्नर भी बनाया गया था।

कार्यशाला की प्रक्रिया :

पहला दिन

सन्दर्भ एवं परिचय :

कार्यशाला का सन्दर्भ एवं रूपरेखा DIET फैकल्टी श्री विजय कुमार जी द्वारा रखा गया। उन्होंने वर्तमान में शिक्षकों की पढ़ने की जरूरतों को रेखांकित किया और बताया कि यह आज के दौर में बहुत जरूरी हो गया है कि शिक्षक पढ़ें। क्योंकि बदलते समय की जरूरत है कि शिक्षक अपडेट रहें।

साथ ही इस कार्यशाला की जरुरत पर अजीम प्रेमजी फाउंडेशन के जिला संयोजक श्री मयंक जी ने भी बात रखी। उन्होंने कहा कि साल-दर-साल हमारे विद्यालयों की स्थिति यथावत ही चलती रहती है। जबकि हमें पढ़ाने के कंटेंट के साथ-साथ अपने कक्षा कक्ष, पढ़ाने के तरीकों को भी बदलने की आवश्कता है।

पढ़ना-लिखना क्यों जरूरी :

इस सत्र में चर्चा के लिए संदर्भदाता श्री अवनीश जी द्वारा इस सवाल से शुरुआत की गई कि पढ़ना क्या है ? और क्यों पढ़ते हैं?

इस सवाल के जवाब में कुछ टिप्पणियाँ इस प्रकार रहीं-

- पढ़ना- चिंतन के लिए, कल्पना शीलता के लिए, समझकर पढ़ने में पूर्व ज्ञान भी शामिल होता है। (ममता जी)
- व्यक्तित्व के विकास के लिए, नई जानकारियों के लिए। (मीना सजवान)
- चीजों का मन में स्थायित्व हो जाना, पढ़ी गई सामग्री का बोध में शामिल हो जाना (ओमप्रकाश सेमवाल)
- आनंद की अनुभूति, बार-बार अभ्यास, व्याकरण का बोध होना
- परिपेक्ष को समझना और अर्थ निकलना
- जीवन को सरल बनाने के लिए, ज्ञान के लिए, नई जानकारियों के लिए (एकता भंडारी)

इसके बाद संदर्भदाता श्री अवनीश जी द्वारा इस सत्र को कुछ बिंदूं पर चर्चा करते हुए समेकित किया गया। ये बिन्दु थे-

- पढ़ना जरुरी है- दिमाग के विकास के लिए, शब्दावली के विकास के लिए, भाषा के ज्ञान के लिए, यादाश्त को विस्तार देने के लिए, ध्यान केन्द्रित करने के लिए, बेहतर लेखन करने के उद्देश्य से, पढ़ना एक तरह से संक्रमण की तरह होता है जब एक पढ़ता है तो दूसरे का भी मन करता है कि वह पढ़े, आलोचनात्मक चिंतन के विकास के लिए, संवेदनशीलता आदि के लिए।

विभिन्न साहित्यिक विधाओं से रूबरू होना :

शिक्षकों से जब यह सवाल किया गया कि उन्होंने कब कोई साहित्यिक विधा या अकादमिक लेख पढ़ा होगा तो लगभग शिक्षकों की तरफ से यही जवाब आया कि अभी वे नहीं पढ़ पा रहे हैं। इसलिए कार्यशाला के इस सत्र में शिक्षकों को विभिन्न विधाओं के कुछ आलेख दिए गए। जैसे-

- कविता की समझ
- युद्ध लड़ रहीं लड़कियां
- आजादी मेरा ब्रांड- समीक्षा
- अच्छे सवाल कैसे पूछें
- मैं क्यों लिखता हूँ ,
- गोदाम
- मैना

- एक सुलझा आदमी
- शिक्षक पढ़ेगा नहीं तो बढ़ेगा नहीं
- अच्छा बाल साहित्य किसे माने
- पढ़ने का माहौल
- पढ़ना और पढ़ाई
- अर्थ कहाँ से आता है
- पुस्तकालय में डिस्प्ले का महत्त्व
- कहानियां और समझ के विभिन्न आयाम

इन विभिन्न लेखों को पढ़ा गया और इसके बाद दिए गए सवालों से मुख्य पक्षों को बोर्ड पर लाया गया-

सवाल-

1. इस लेख में खास बात क्या है?

2. यह लेख किन प्रक्रियाओं की बात करता है ?

3. आपके लिए इस article की क्या प्रासंगिकता हो सकती है?

शिक्षकों ने व्यक्तिगत तौर पर ये विभिन्न लेख पढ़े और इनके सन्दर्भ में उपरोक्त सवालों के माध्यम से इन पर गहन चर्चा की। कई लेखों पर विस्तृत विमर्श हो पाया। शिक्षक पढ़ी गई रचनाओं की विधाओं पर बात कर पाए। इन विधाओं की भाषा इस सत्र में शिक्षकों ने अपने जीवन व परिवेश के अनुभवों को शामिल करते हुए चर्चा को सार्थक बनाया। इस सत्र के दौरान शिक्षकों को लगा कि इस तरह की चर्चा से बहुत सारे आयाम खुल सकते हैं किताबों के आप-पास। और इस शीर्षक- *"किताबें करती हैं बातें"* की प्रासंगिकता और सार्थकता समझ आई।

दूसरा दिन :

पहले दिन का रिकैप- शिक्षिका एकता भंडारी जी ने पहले दिन हुई गतिविधियों को याद दिलाया और मुख्य पक्षों को उभार कर रेखांकित किया।

बाल साहित्य क्यों :

इस सत्र की शुरुआत में सवाल रखा गया कि बाल साहित्य क्यों प्रयोग किया जाए? साहित्य के साथ क्या गतिविधियाँ करते हैं?

तो इसके जवाब में कुछ जवाब इस प्रकार आए-

- बच्चों के आल राउंड विकास के लिए
- भाषा के विकास के लिए और भाषा विकसित होगी तो अन्य विषय भी बेहतर हो जाएँगे
- इससे जोड़कर लेखन गतिविधियाँ की जा सकती हैं
- बच्चों की रूचि जगाने के लिए
- साहित्य के साथ- बड़े फॉण्ट वाली पुस्तकों के साथ काम
- जहाँ निरंतरता में पढ़ाया जाता है, वहां बच्चे उत्सुकता से किताबों का इंतजार करते हैं, घर लेकर जाते हैं, बच्चों में किताबें पढ़ने का competition रहता है
- समय प्रबंधन चुनौती रहता है।

इस गतिविधि की चर्चा का समेकन संदर्भदाता द्वारा निम्न बिन्दुओं के साथ किया गया:

- बाल साहित्य हमें एक आनंदमयी स्थिति में ले जाता हैं।
- हमें/ बच्चों को कुछ नई सूचनाएं प्रदान करता है।
- यह हमारी/बच्चों की मानसिक दुनिया का विस्तार करता है।
- अनजानी दुनिया में ले जाता है जो अभी एक्सपीरियंस नहीं की है।
- अलग समय और स्थान पर ले जाता है।
- यह हमें अपने आप पर रिफ्लेक्ट करने का मौका देता है (साहित्य दर्पण भी है)।
- हम अपनी धारणाओं पर विचार करने का मौका देता है।
- साझा मानवीय भावनाएं- आशा, प्रेम, डर, दुःख, चिंता, ख़ुशी, नुकसान आदि।

अंत में, बाल साहित्य में क्या हो? और क्या न हो? के सवालों के साथ शिक्षकों के साथ सत्र का समेकन किया गया।

बाल साहित्य में क्या हो – कुछ ऐसे बिंदु शामिल किये गए जो बाल साहित्य की विशेषता दर्शाते हैं-

- सरल, सहज और रोचक भाषा जिससे पढ़ने की जिज्ञासा बढ़े
- रंगीन चित्र
- कल्पनाशीलता
- बच्चे की दुनिया से जुड़ाव
- कविताओं में लयात्मकता और रोचकता बनाये रखने के लिए तुकांत शब्द होने चाहिए यदि छोटे बच्चों के साथ काम कर रहे हैं तो
- पुस्तकें बच्चों के स्तर के मुताबिक हो

बाल साहित्य पढ़ना समझना :

दूसरे दिन बाल साहित्य क्या और क्यों पर बात हुई। इसके बाद रीडिंग कार्नर का अवलोकन करते हुए अपनी पसंद की पुस्तक चुनी और सबने पढ़ी। कुछ शिक्षक साथियों द्वारा अधि गई पुस्तकों पर बात रखी गई। इसकी विशेषताओं पर बात हुई। यह साहित्य प्रयोग करने का क्या मकसद होगा और कैसा साहित्य हमें चुनना चाहिए आदि मुद्दों पर चर्चा हुई।

पढ़ी गई पुस्तकों पर गतिविधियाँ :

शिक्षकों को गतिविधियों का आईडिया देने के लिए कुछ स्थानीय शिक्षकों के प्रयासों को भी विडियो के माध्यम से दिखाया गया। जीपीएस जाबरी एवं जीपीएस सुमाडी की रीडिंग गतिविधियों को यहाँ दर्शाया गया।

इसके बाद पांच समूहों में अलग-अलग गतिविधियां डिजाईन करने को दी गई।

जैसे-

- **समूह 1**. कहानी का नाटकीकरण एवं प्रस्तुतीकरण साथ मुखौटे आदि भी बनाना
- **समूह 2**. कविताओं को गीत के रूप में प्रस्तुत करना, लय-ताल-धुन बनाना प्रस्तुत करना

- **समूह 3**. छोटी कविता/कहानी से चार्ट, कार्ड्स और पट्टियाँ आदि का निर्माण करना
- **समूह 4**. पात्र, घटनाएँ आदि बदलकर कहानी को मौखिक अथवा लिखित प्रस्तुत करना
- **समूह** 5. पुस्तक का परिचय, पुस्तक का रीड-अलाउड एवं चर्चा प्रश्न तैयार करना

इन समूहों ने पुस्तकों पर उपरोक्त गतिविधियां तैयार की, गतिविधियों के अनुसार चार्ट, मुखोटे, कविता पट्टी और पोस्टर आदि का निर्माण भी किया। समूह कार्य के दौरान सन्दर्भदाताओं द्वारा भी इनपुट दिए जाते रहे।

अब इन समूहों द्वारा तैयार की गई गतिविधियों का प्रस्तुतीकरण किया गया। प्रस्तुतीकरण के साथ-साथ अन्य शिक्षकों और संदार्भदाताओं द्वारा बेहतरी के लिए सुझाव शामिल किए गए।

भविष्य की योजना :

अंत में भावी योजना पर बात हुई जिसमें इन सब शिक्षकों के विद्यालयों में अच्छे रीडिंग कॉर्नर बनें और उनका बच्चों के साथ वास्ता बनाए जाने पर सहमति बनी। इस रीडिंग कार्नर का सम्बन्ध अलग-अलग सीखने के स्तर के बच्चों के साथ सम्बन्ध बनाया जाए और और उनका सीखना सुनिश्चित किए जाने सम्बन्धी चर्चा हुई।

समापन :

DIET फैकल्टी श्री विजय कुमार जी एवं VK यादव जी ने समापन अवसर पर शिक्षकों के उत्साह वर्धन करते हुए विद्यालय स्तर पर बाल साहित्य का ज्यादा से ज्यादा से ज्यादा उपयोग करने के आह्वान के साथ अपनी बात रखी। प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र वितरण के साथ कार्यशाला का समापन किया गया।

क्या अच्छा रहा :

- शिक्षिकों द्वारा विभिन्न साहित्यिक लेख पढ़ना और उन पर रिफ्लेक्ट करते हुए अपने अनुभव को शामिल करना।
- रीडिंग कार्नर की स्थापना करना जिससे शिक्षकों को रीडिंग कार्नर बनाने का एक आईडिया मिल पाया।
- बाल साहित्य के अध्ययन का मौका शिक्षकों को मिल पाया तथा साथ ही कुछ ऐसी गतिविधियाँ डिजाईन कर पाए जो उन्हें उनके कक्षा कक्ष में काम करते वक्त काम आएंगी।
- पुस्तकों के साथ जोड़कर कक्षा में काम आने वाला TLM भी बना पाए। जिसमें कहानी पोस्टर, कविता पोस्टर, कविता पट्टियाँ, चित्र पोस्टर और शब्द कार्ड आदि शामिल हैं।
- शिक्षकों डायरी और कहानी कार्ड काफी पसंद आए जो कि उन्हें दिए गए थे। डायरी में बच्चों के स्तर की रोचक कहानी-कविता शामिल किए गए थे जिनको वे बच्चों के साथ प्रयोग कर पाएंगे। कहानियों के लेमिनेशन किए हुए कार्ड का सेट भी शिक्षकों को दिया गया जिसमें FLN स्तर, कक्षा 3 से 5 स्तर और कक्षा 6 से 8 के स्तर की कहानियां शामिल थीं।

फोटो गैलरी :

सभागार
जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान रूद्रप्रयाग (रतूड़ा)
''किताबें करती हैं बातें''

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान
रूद्रप्रयाग (रतूड़ा)
Reading Corner

सभागार
जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान रूद्रप्रयाग (रतूड़ा)
''किताबें करती हैं बातें''